'वर्धानिवासी श्रीयुत कस्तुरचंदजी
चीमनीरामजीकी ओरसे भेट.

'सुविचारमाला'—मणका ११ वा.

महात्मा कबीरजी
के
आध्यात्मिक पदों.
(टीका समेत)

द्वितीय खंड.

प्रथमावृत्ति-प्रत ८००

विक्रम १९६७-ई. स. १९११

प्रसिद्ध कर्त्ता,
वाडीलाल मोतीलाल शाह
सम्पादक, जैनसमाचार.
अहमदाबाद.

मूल्य —४—०

'जैनसमाचार' पत्रकी स. १९११ की ८ वी भेट.

'भारतबन्धु' प्रिण्टिंग वर्क्स नामक मुद्रालयमें
वाडीलाल मोतीलाल शाहने छापा.

भक्ति केवी रीते करशो?

माला तो करमें फिरे, जीभ फरे मुखमांहि;
मनवा तो चौदिश फिरे, ऐसो सुमरन नाहि. १

सुमरन ऐसो किजीये, खरे निशाने चोट,
सुमरन ऐसो किजीये, हले नहिं जीभ होठ. २

अंतर ' हरि हरि ' होत है, मुखकी हाजत नाहिं;
सेहेजे धून लगी रहे, संतनके घट मांहि. ३

(१) हाथमां माळा फरे, मुखमां जीभ फरे अने ते ज प्रमाणे मन पण विश्वमां फरेछे–भटकेछे; तो एवी जातना प्रभुस्मरणथी शुं दहाडो वळवानो हतो ?

(२) जेम कोइ नीशानबाज माणस बराबर धारेला नीशान पर ज तीर च्होंटाडी दे छे, तेम त्हमे पण प्रभु उपर त्हमारुं ध्यान च्होंटाडो. जीभ के होठ हलाववानी जरुर नथी. ध्यान कांइ शब्दथी नहि पण मनथी थवानुं छे.

(३) 'संत' अथवा 'हरिजन' केवा होय छे ? तो कहे छे के, एमना अंतरमां हरिनुं भान सदैव होय छे, तेथी मुखथी 'हरि' एवो उच्चार करवानी एमने 'हाजत' अथवा भुख रहेती नथी. संतना घटमां 'सहज' अथवा स्वाभाविक रीते ज धून लागी रहेती होय त्यहां बाह्य पोकारनी शी जरुर होय ? आ पदमां 'संत'नी व्याख्या बहु सारी आपी छे. 'संत' ए संस्कृत शब्द छे अने ते अस् = होवुं ए धातु उपरथी नीकळेलो छे. जे हरिवासमां 'छे' अथवा जे अमरताना भानमां दाखल थयोछे तेज संत अथवा हरिजन. बाह्य क्रिया उपरथी संतनी परीक्षा थाय ज नहि.

सुमरन सुरति लगाय दे, मुखसे कछु ना बोल;
बाहेरके पट देय के, अंतरके पट खोल. ४

लेह लगी तब जानीये, कबहू छूट न जाय;
जीवत हि लागी रहे, मुवा मांहीं समाय. ५

बुंद समाना समूद्रमें, जानत है सब कोय;
समूद्र समाना बुंदमें, जाने विरला कोय ! ६

(४) भक्ति केम करवी ते बतावे छे. प्रभु साथे एवी सुरति लगाव के म्होडेथी कांइ न बोलवुं पडे. वहारनी सर्व क्रियाओ मोकुफ राखी अंदरना पडदा खोल. देहना बाह्य धर्मोने विसारी आत्माना आंतरीक धर्ममां लीन था. जेम कोइ माणस जगतथी कंटाळीने पोताना घरमां पेशी, बारणां बंध करी, पोतानी पतिपरायण स्त्री के हसमुखां बाळकोमां सुख शोध, तेमज हे भक्त ! तुं बाह्य प्रवृत्ति छोडी, इंद्रीयोनां द्वार बंध करी, अंदर प्रवेश कर; त्यहां सुमति रुपी स्त्री के सार्वत्रीक प्रेमना विचारो रुपी बाळको साथे कल्लोल कर.

(५) परमात्मानो खरो प्रेम लाग्यो छे एम बोलनारा तो घणाए होय छे; पण त्हेनी कसोटी शी ? जे माणस जीवतां सुधी तो परमात्माना प्रेममां मस्त रहे एटलुं ज नहि पण मृत्युबाद पण ए प्रेमनां राज्योमां ज जाय ए ज माणस खरो प्रेमी समजवो. मतलब के खरो प्रेम समय, जगा के संजोगोथी मर्यादीत नथी होतो.

(६) पाणीनुं एक बिंदु समुद्रमां समाय ए तो समजाय एवी वात छे; पण समुद्र आखो एक बिंदुमां समाइ जाय ए समजावुं मुश्केल छे. छतां ध्यानमां मस्त रहेनार पुरुष अने परमात्मा ते बेनी बाबतमां उपर मुजब ज बने छे. ध्यान धरनार मनुष्यनुं हृदयाकाश के जे एक बिंदु अथवा बुंद समान छे त्हेमां ते, परमात्माने के आखा विश्वने भाळी शके छे. पवित्र थयेला--प्रकाशीत हृदयमां

भक्ति द्वार है सांकडा, राइ दसमा भाय;
मनहि जब मावत हो रहा, क्युं कर सके समाय ? ७

राइ बांता बिसवा, फिर विसनका विश;
ऐसा मनवा जो करे, ताहि मिले जगदीश. ८

माला जपुं न कर जपुं, मुखसे कहुं न राम;
राम हमारा हमको जपे, मैं बेठा रहुं विश्राम ! ९

आखा विश्वनुं प्रतिबिंब भळाय छे. आ 'योग' नो विषय अति गहन छे, तेथी वीरला--योगी जनो ज ते समजी शके छे.

(७) 'भक्ति द्वार' एटले जे दरवाजे थइने भक्तो परमात्मा पासे जइ शके छे ते दरवाजो एवडो तो सांकडो छे के जाणे रइना दाणानो दसमो भाग जोइ ल्यो ! एवा सांकडा दरवाजामां थइने जवानुं छे छतां मन तो कहे छे के हुं हाथी उपर मावत बेसे छे ते जगाए बेसीने दरवाजामां पेसुं ! आ वात केम बने ? माटे मन जो अभिमान रुपी हाथीथी नीचे उतरीने न्हानुं थइ जाय–नम्रता शीखे तोज ते सांकडा दरवाजाथी प्रवेश करी परमात्मानी हजुरमां आवी शके. 'नमे ते हरिने गमे' अर्थात् नम्रता राखे–अहंपदथी दूर रहे ते माणस परमतत्वनी प्राप्तिनो अधिकारी थाय.

(८) वळी आगळ वधीने कबीरजी कहे छे के, रइना दाणाना दशमा भाग जेटलो दरवाजो छे माटे ते दरवाजे थइने जवानी इच्छा राखनार मन तो राइना वीसमा भागना पण वीसमा भाग जेवडुं बनाववुं जोइए.

(९) म्हारे लोकोनी माफक हाथथी माळा जपवानी जरुर नथी अने मुखथी पण जपवानी जरुर नथी. हुं तो शान्त बेठो रहुंछुं अने म्हारो राम उलटो म्हने जपे छे. ध्यानारुढ थइ परमात्मस्वरुपमां लीन थवाथी आत्मस्वरुप जोवाय छे.

साधु कोने कहेवा ?

(१)

केशो कहां बिगाडयो, जो मुंडे सो बार ?
मनको काहे न मुंडियो, जामें विषय विकार ? १

मन मेवासी मुंडिये, केश हि मुंडे काहे ?
जो किया सो मनहि किया, केश किया कछु नाहे. २

स्वांग पेहरे शुरा भया, दुनिया खाइ खुंदः
जो सेरी सत् निकसें, सो तो राखे मुंढ. ३

(१) हे द्रव्यसाधुओ ! हे साधुवेपधारीओ ! त्हमारा माथाना केश एटले वाळनो शो वांक छे--तेणे त्हमारुं शुं वीगाडयुं छे, के जेथी त्हमे सो वार--वारंवार एना उपर वैर लेवानी माफक मुंडवामां ज 'धर्म' ने समाप्त थतो मानो छो ? मुंडवुं होय तो 'मन'ने मुंडो, के जेमां विषय विकार भरेला छे. बहारथी साधुनो वेप राखनारा घणाए ढोंगीओ मनथी तो विषयविकारथी भरपुर छे-ए केश कहाडवानी एमनी इच्छा नथी !

(२) खरो मेवासी—खरो लूटारो तो 'मन' छे; एने मुंडे तो खरो साधु कहेवाय; केश मुंडेथी शुं थवानुं हतुं ? बीचारा केशे तो कांइ कर्युं नथी, जे कांइ करेछे ते तो पेलुं मन करेछे.

(३) साधुनो स्वांग पहेरवामां तो शुरातन घणुंए छे; पण साधु थया पछी खाइ-पीने दुनीआंने खुंदवानुं-पजववानुं ज आवडयुं ! जे शेरी (Street) मां 'सत्' याने 'परमतत्व' प्रगट थइ शके छे ते शेरीने तो अर्थात् कार्मण शरीरने तो मूढ दशामां-सुनमुन दशामां राखे छे; ए कार्मण शरीरद्वारा 'सत्'नो प्रकाश थइ शके छे ते छतां ए शरीरने खीलववा माटे कांइ प्रयत्न करतो नथी.

हाथ महीं माला फिरें, हिरदा डामाडुल;
पग तो पालामें गला, भान न लागे मूल. ४

माला पेहरे मन सुखी, तासें कछु न होय;
मन मालाको फेरते, जुग उज्याला होय. ५

माला पेहरे कौन गुन, मनकी दुबधा न जाय;
मनमाला कर राखीये, हरि चरन चित्त लाय. ६

---

(४) हाथमां माळा रही गइ छे पण हृदय तो डामाडोळ दशामां छे, एमां तो कांइ कांइ जातना संकल्प विकल्पनां मोझां उठे छे. अने साधुमहाराजना पग वळी मायामां खुंची गया छे, त्हेने बहार कहाडवानु भान पण त्हेने नथी.

(५) माळा पहेरवाथी मन सुख मानी ले तो भले; बाकी तेथी कांइ दहाडो वळे नहि. पण जो मन रूपी माळाना मणका एक पछी एक फेरवे तो आखा विश्वमां प्रकाश–प्रकाश ज नजरे पडे. मनना खराब भावने एक पछी एक तपासी जइ त्हेने मणकानी पेठे आंगळा-मांथी छटकी जवा दइ बीजा मणकाने पकडवो, त्हेने पण तपासीने पछी सरी जवा देवो; छेवटे म्होटो मणको के जे एक ज होय छे–जे सर्वोपरी ' सत् ' छे त्यहां जइ स्थीर थवुं. त्यहांथी आगळ जवानुं ज नथी. आ स्थितिमां आवनारने विश्व मात्रमां 'जीवता प्रेम'-नो प्रकाश साक्षात् जोवामां आवे.

(६) माळा पहेरवाथी जो मननी दुबधा दूर न थइ शके तो ते क्रिया शा कामनी ? ते करतां तो मनने ज माळा बनावीए अने परमात्मानी भक्तिमां तल्लीन थइए ए केवुं ?

मनका मस्तक मुंड ले, काम क्रोधका केश;
जो पांचोको वश करे, तो चेला सबहि देश. ७

माला तिलक बनायके, धरम बिचारा नाहिं;
माला बिचारी क्या करे ? मेल रहा मन मांहिं ! ८

मुंड मुंडावत जुग गये, अजहु न मिलिया राम;
राम बिचारा क्या करे ? मनके और हि काम ! ९

काष्ट काट माला किनी, मांहे पिरोया सूत;
माला बिचारी क्या करे, जो फेरनहार कपूत ? १०

---

(७) बीचारा वेशधारीओने चेला मेळववानो शोख बहु होय छे तेथी अनेक अनर्थ सेवीने पण चेला मेळववा दोडे छे; परन्तु कबीरजी कहेछे के, एम तो मात्र बे चार चेला मळशे पण जो त्हारे आखी दुनीआने चेला बनाववानी इच्छा होय तो हुं कहुं तेवो साधु बन; प्रथम मन रुपी मस्तक परथी काम--क्रोध रुपी केशने मुंडीने दूर कर. जो तुं मन अने पांच इद्रियोने वश करशे तो आखी दुनीआना जीवो त्हारा चेला बनशे.

(८) माळा--तीलकनो देखाव तो सारो कर्यो अथवा मुह-पति--रजोहरणनो देखाव पण सारो कर्यो, पण धर्मनुं रहस्य तो विचार्युं नहि. मनमां तो मेल रही गयो त्यहारे पछी माळा वगेरे बाह्य उपकरण बीचारां त्हने शुं करी शकवानां हतां ?

(९) आम माथुं मुंडावतां--मुंडावतां अनेक जुग वही गया पण हजीए 'राम'--परमतत्वनी प्राप्ति थइ नहि. (ओघा--मुहपति तो मेरु पर्वत जेटला कर्या पण हजीए आत्माने चीन्यो नहि.) मन जूदेज रस्ते भटके त्यहां बीचारो राम शुं करे ?

(१०) माळामां कांइ जीव नथी; ए तो लाकडाने कापीने अंदर

माला तिलक तो भेख है, रामभक्ति कछु और;
कहे कबीर जीने पहन लिया, पांचो राखो ठोर. ११

माला तो मनकी भली, और संसारी भेख;
माला पेहेरे मन सुखी, तो बोहोराके घर देख ! १२

माला मुजसे लड पडी, काहे फिरावे मोहे ?
जो दिल फेरे आपना, तो राम मिलावुं तोहे ! १३

भरम न भागा जीवका, अनंत धराये भेख;
सत् गुरु समजा बाहेरा, अंतर रहा अलेख. १४

दोरो परोवीने बनावेली छे; माटे जो माळा फेरवनारो ज कपूत होय तो माळा शुं करी शकवानी हती ?

(११) माळा–तीलक–मुहपति–रजोहरण ए सर्वने धीकारवानी जरुर नथी, पण ए सर्व 'भेख' छे; अने रामभक्ति–आत्मैकता ए कंइ ओर ज चीज छे. जे लोको भेख पहेरे छे त्हेमने कबीरजी कहे छे के, भला थइने पांचे इन्द्रिओने ठेकाणे राखजो, रखेने कोइनां घर मारता !

(१२) माळा तो मननी ज सारी; बाकी तो संसारीनी पाघडी–कोट वगेरे जेम वेष छे तेमज आ पण वेष छे. छतां पण कोइने माळा पहेरवाथी ज सुख लागतुं होय तो कहुंछुं के, पेला वोराजीनी दुकाने जा, त्यहां घणीए माळाओ टांगी राखी छे !

(१३) कबीरजी कहे छे के, एक दिवस माळा म्हाराथी छेडाइ पडी अने म्हने ठपको आपवा लागी के, हे मूर्ख ! तुं म्हने शा माटे फेरव फेरव करे छे ? म्हें त्हारुं शुं बगाडयुं छे ? फेरव त्हारा दीलने, अने पछी जो के हुं त्हने 'राम' मेळवी आपुंछुं के नहि !

(१४) पार वगरना भेख पहेर्या–घडीमां धोळा–घडीमां

तनको जोगी सब करे, मनको करे न कोय;
मनको जोगी जो करे, सो गुरु बालक होय. १५

मन मेला तन उजळा, बगला कपटी अंग;
ताते तो कउवा भला, तन मन एक हि रंग! १६

पीळा--घडीमां दीशारुपी वस्त्र एम अनेक भेख धर्या पण हजीए जीवनो भ्रम तो भाग्यो नहि ज! कारण के म्हें मूरखाए 'सत्गुरु' अथवा परमात्माने बहार ज ढूंढया, पण ते तो म्हने खबर न पडे एवी रीते 'अंदर' ज हता!

(१५) ल्यो सांभळो, कबीरजीए वर्थेलुं मार्मिक रहस्य. तेओश्री फरमावे छे के, जेनुं 'मन' ज योगी होय ते तो 'बाळक' जेवा याने राग--द्वेष रहीत--'हुं' पणा रहीत होय; एवाने म्हारा 'गुरु' मानुं. बाकी शरीरने 'जोगी' बनावनारा पाखंडी तो बार लाखने बाणु हशे त्हेने म्हारी बलारात नमे छे! रळवुं कठण लागे के संसारमां आवी पडेलुं कोइ दुःख वसमुं लाग्युं एटले तुरत माथुं मुंडीने वेष पहेरी लीधो अने बन्या 'तरणतारण'! पण पोते तर्या सिवाय 'बीजाने तारनारा' एवो खीताब शरुआतमां ज आ लोको शी रीते लइ शकता हशे ते कांइ समजातुं नथी.

(१६) तन एटले शरीरने उजळुं अथवा टापटीपवाळुं अथवा साधुतानो देखाव करनारुं राखे अने मन तो मलीन राखे, आवा साधुडाओ खरेखर 'बगला' जेवा छे. एमना करतां तो पेला कागडा सारा के जेओ मनना मेला छे तो बहारथी शरीर पण काळुं ज राखे छे, के जेथी एमनाथी कोइ ठगाता पामे नहि. अने आ धूतारा साधुओए तो बहारथी साधुतानो स्वांग पहेरी अंदरनी मलीनता राखी जगतने भ्रमणाना खाडामां होमवाना धंधो आदर्यो छे!

कविता कोटी कोट है, सिरके मुंडे कोट;
मनके मुंडे देख कर, ता संग लिजे ओट. १७

मस्तक मुंछ मुंडायके, काया घाटम घोट;
मनको काहे न मुंडियो, जामें सबहि खोट ? १८

(२)

गुरु लोभी शिष्य लालची, दोनो खेले दाव;
दोनो डूबे बापडे, बेठ पथ्थरकी नाव. १

---

(१७) ज्ञानमी कविता बनावनारा पंडीतो कोटानकोटी छे, शिर मुंडावनारा पण क्रोडो छे. पण जे मनने मुंडे–ताबे करे त्हेनी ज तुं सोबत करजे.

(१८) माथुं--मुंछ वगेरे मुंडावीने कायानुं रुप बदली नाखनारा त्यागीओ मनने केम मुंडता नहि होय ? खरी खोट तो मन मुंडनारनी छे; ए खोट–ए तंगी कोइ पुरी पाडतुं नथी.

(१) गुरु अने शिष्यनी जोडी घणेभागे एक सरखी ज मळे छे. गुरु 'लोभी' होय अने शिष्य 'लालचु' होय. आ सिद्धांत बराबर समजवा जेवो छे. जे माणस जे चीजने लायक होय ते ज त्हेने मळेछे. आकर्षण (Attraction) ना नियम प्रमाणे समान प्रकृतिओ एकबीजाने पोता तरफ खेंचे छे. गुरु पैसानो लोभी होय के पछी (ज्यहां अन्न--वस्त्र मागवा पहेलां बमणां मळतां होय तेथी लक्ष्मीनी जरुर न रहेती होय त्यहां) माननो लोभी होय; अने शिष्य 'लालचु' होय एटले के थोडे खर्चे के थोडी महेनते (मात्र आ गुरुराजनी पगचंपी करवाथी के एना चेलाने दिक्षा आपवामां बे चार हजार रुपीआनुं खर्च करवाथी के एनो गमे तेवी बाबतमां पक्ष करवाथी) स्वर्ग मळी जशे एवी लालचथी ते शिष्य थाय छे.

जाका गुरु है लालची, दया नहिं शिष्य मांहि;
ओ दोनोको भेजिये, उज्जड कुवा मांहि ! २

गुरु गुरु सब कहा करो, गुरुहि 'घर'में भाव,
सो गुरु काहे किजीये, जो नहि बतावे दाव ? ३

बंध से बंधा मिला, छुटे कैान उपाय ?
संगत कीजे निर्बंधकी, पलमें दिये छुटाय. ४

दुनीआना साधुओ अने भक्तोनो म्होटो भाग आवो ज होय छे. पथ्थरनी होडीमां बेटेला शिष्यो डूबे एमां शुं आश्चर्य ?

(२) वाहरे कबीरजी वाह! त्हमारा जेवा सत्यकथन निडरपणे करनारा पुरुषो थोडा ज थया हशे. जेना गुरु पैसा के मानना लालची होय त्हेना शिष्यने दया तो होइ शके ज नहि; कारण के पैसा के मान रळवा माटे अनेक दगाफटका अने काट--कूट करवी पडे; एमां शिष्यो गुरुनी भक्ति खातर--थोडी महेनते मोक्ष सुंदरीने वरी बेसवा खातर--हथीआर तुल्य बने ज. माटे एवा गुरु अने एवा चेलाने तो उज्जड कूवामां पधरावी दो, के जेथी कोइ कहाडनार पण न मळे !

(३) हे लोको ! त्हमे बधा भला माणस छो, त्हमे 'गुरु-गुरु' एवा पोकार कर्या करोछो; पण त्हमारा गुरुना भाव एटले लक्ष तो 'घर' एटले संसारमां–संसारी जेवा काममां छे. जे गुरु संसार भावने अळगो करी परमतत्वनो प्राप्तिनो 'दाव' बतावे नहि त्हेने 'गुरु' कयो मूर्ख कहेशे ?

(४) बांधेला बांधेलाने केम छोडवी शके ? कर्मोथी खरडायलो बीजाने कर्मरहीत केम करी शके ? लोहीथी कपडां धोवाय ज नहि. माटे निर्बंध–मुक्त पुरुषोनी संगत करो के जेथी पळमां त्हमने पण 'छूटा' करशे.

पुरा सद्गुरु ना मिला, रहा अधुरा शिख;
स्वांग जतिका पेहेरके, घर घर मांगे भिख. ५

सद्गुरु ऐसा किजीये, तूर्त दिखावे सार;
पार उतारे पलकमें, दर्पन दे दातार. ६

(३)

दया गरीबी बंदगी, समता शील स्वभाव;
एते लक्षन साधके, कहे कबीर सद्भाव. १

---

(५) हे साधुनामधारी ! त्हने कोइ ‘पुरो’ सद्गुरु मळ्यो नथी जणातो; तेथी तुं पण ‘अधुरो शिख’ एटले ‘ अपूर्ण शिष्य ’ बन्यो अने जतिनो–साधुनो स्वांग पहेरीने घेर घेर टुकडा मागी खावा मांड्या !

(६) सद्गुरु एवा मेळववा जोइए के जे जलदी जलदी ‘सार पदार्थ’–आत्मपीछान मेळवी आपे अने भवजळ पार उतारी दे. कारणके सद्गुरु तो बीजुं कांइ देता नथी, मात्र दर्पण देछे. एटले के हृदयनी निर्मळता करी आपे छे. जेम कोइ बाळकना हाथमां दर्पण आपवा छतां एमां पोतानुं म्हों जोवानो परिश्रम तो बाळके पोते ज लेवो पडशे; तेम सद्गुरु कांइ आत्मानुं दर्शन करावता नथी, पण हृदयने अरीसा जेवुं बनावी आपे छे, के जेथी करीने शिष्य ते अरीसामां पोतानुं स्वरुप जोइ शके.

(१) अत्यार सुधी साधुनामधारीनां लक्षण बतावी भोळा लोकोने चेतव्या; हवे साचा साधुनां लक्षण बतावी एमना शरणे जवानी सलाह आपेछे. कबीरजी ‘सद्भाव’ कहेछे अर्थात् जेवुं छे तेवुं--यथारुप सत्य जणावे छे के, दया, नम्रता, भक्ति, सम--ता

मान नहि अपमान नहि, ऐसे शितल संत;
भवसागर उतर पडे, तोडे जमके दंत. २

आशा तजे माया तजे, मोह तजे, अरु मान;
हर्ष शोक निंदा तजे, कहे कबीर संत जान. ३

संत खरे सोही कहो, जीने कनक कामीनी त्याग;
और कछु इच्छा नहिं, निशदिन रहे विराग. ४

अथवा सुख--दुःखमां मननी अडोलवृत्ति अने शीलः आ पांच, 'साधु'नां लक्षण समजजो. (कबीरजीए आपेला आ 'कसोटीना पथ्थर' उपर पोतपोताना गुरुने घसी जोवाथी दरेक माणसने खात्री थशे के ए ते साचुं सोनुं छे के कथीर छे !)

(२) जे पुरुषने मान--अपमाननी लेश मात्र असर थती नथी एवी शीतलता प्राप्त थइ छे, ते ज पुरुष भवसागर तरी शके अने जमना दांतने तोडी शके; अर्थात् फरी मरवानी जरुर त्हेने रहे नहि.

(३) कबीरजी कहे छे के, जे पुरुष आशा (इच्छा) ने तजे, मायाने पण तजे, मानने पण तजे अने हर्ष--शोक नामनी लागणीओ साथे निंदाने पण तीलांजली आपे एने ज तुं 'संत' जाणजे.

(४) जेणे कंचन अने कामीनी त्यजी छे, त्यजी छे एटलुं ज नहि पण ते ते चीजोनी इच्छाने पण त्यजी छे अर्थात् बाह्य तेमज अभ्यंतर त्याग कर्यो छे अने परमात्मा साथे ज जेनो तार लागेलो छे त्हेने 'संत' कहेवो.

हरिजन हारा ही भला, जीतन दे संसार;
हारा हरिपें जायगा, जीता जमकी लार ! ५

सुखके माथे सिल पडो ! हरि हिरदेसे जाय;
बलिहारी आ दुःखकी, पल पल राम संभराय ! ६

आपा त्यां अवगुन अनंत, कहे संत सब कोय,
आपा तज हरिको भजे. संत कहावे सोय. ७

(५) 'हरिजन' एटले हरिनो दास अथवा विश्वव्यापक तत्व ए रुपी जे हरि त्हेनो दास एटले जगतमात्रनी सेवा एज जेनो जीवन-मंत्र छे एवो पुरुष. एवो हरिजन तो ' संसार ' थी एटले के स्थूल संसारमां मग्न रहेला मनुष्यथी हारे ज. एवानी साथे चर्चा करवा हरिजन के जेने दुनीआनां अनेक परोपकारी कामो करवानां होय छे ते मुद्दल फुरसद मेळवी शके नहि. माटे एवा पुरुषोथी तो हरि-जन हारे एज ठीक छे. अने ' हारेलो ' हशे ते हरि तरफ चित्त दोरवशे; जीतेलो तो जमनी तरफ जवानो. जेने संसारी जनो ' जीत ' कहे छे ते तो नरकनो रस्तो छे. संसारीओ जेने निंदे छे एनामां ज प्रायः कांइ माल होय छे.

(६) सुखना उपर म्होटा पथ्थर पडजो ! कारण के सुखनी मीठी केफने लीधे हृदयमांथी हरि जता रहे छे. बलीहारी तो दुःखने छे, के जे क्षणे क्षणे रामनामने याद करावे छे.

(७) सघळा संतजनो पोकारी गया छे के, ज्य्हां 'आपा' अथवा 'हुं' पणुं छे त्य्हां अनेक अवगुण भर्या छे. जे 'आप'ने भज-वानुं छोडी दइ 'हरि'ने भजे ते खरो संत कहेवाय. अहीं शब्दार्थ विचारवा जेवा छे. 'हुं' पणानी सांकडी जेलमांथी मनने मुक्त करी परमात्मतत्व के जे विश्वव्यापक छे त्हेने 'भजवुं' एटले ते भावमां जवुं (भजवुं = जवुं.)

हरिजन ऐसा चाहिये, जैसा फोफल भंग;
आप करावे टुकरा, और पर मुख राखे रंग. ८

तन ताप जीनको नहि, न माया मोह संताप;
हरख शोक आशा नहि, सो हरिजन हर आप. ९

चंदन जैसा संत है, सर्प जैसा संसार;
अंग ही से लपटा रहे, छांडे नहीं विकार. १०

एक घडी आधी घडी, आधी उनमें आध;
संगत करिये 'संत'की, तो कटे कोट अपराध. ११

---

(८) हरिजन तो एवो होय के जाणे फोफल अथवा भागेली सोपारी जोइ ल्यो ! पोताना टुकडा थशे ते सहन करीने पण बीजाने फायदो करशे. 'जग--सेवा' एज एनो 'धर्म' होय छे.

(९) हरिजन अने हरि ये एक ज छे, एमां भिन्नभाव नथी; पण क्यहारे के त्हेने शरीरनो ताप एटले पीडा लागी शके ज नहि एवो तल्लीन भाव पेदा थयो होय अने माया--मोहनो पण संताप दूर थयो होय, अने हर्ष--शोक--आशा रही न होय.

(१०) 'संत' अने 'संसारी' ए बे वच्चे तफावत बतावे छे के, संत तो चंदन समान छे अने संसारी जन सर्प जेवा छे. चंदन पोते घसाइने पण परने शान्ति आपे छे. सर्प पोताने दूध पानारने पण करडे छे. बस एटलो ज तफावत. बाकी कांइ मेलां लूगडांनो के सरळतारहीत च्हेरानो के एवो कोइ बाह्य तफावत नथी.

(११) अने एवा साचा 'संत'नी सोबत एक घडीने माटे ज मळे--अरे अडधी के पा घडी ज मळे तो पण एवी संगतथी करोडो पाप नाश पामे.

साधु थवुं कांइ रस्तामां पडयुं नथी.

जब लग नाता जातका, तब लग भगत न होय,
नाता तोडे हरि भजे, 'भक्त' कहावे सोय. १

हाट हाट हिरा नहिं, कंचनका नहिं पहार;
सिंहनका टोला नहिं, संत बिरला संसार. २

संत संत सब को कहे, संत समूदर पार;
अनल पंखका को एक है, पंखका कोट हजार. ३

(१) 'हरिभक्त' अथवा साधु बनवुं कांइ रस्तामां पडयुं नथी. ज्यहां सुधी 'जात' साथे 'नातो' रहे छे एटले के संबंध रहे छे त्यहां सुधी 'भक्त' थइ शकाय ज नहि. 'नात' ए एक संसारी जनोए उत्पन्न करेलो भेदभाव छे. ए 'भेदभाव' भक्त पुरुषने होय ज नहि. एने मन तो 'वसुधा एज कुटुंब' एम होय. आवा क्षुद्र बंधारणोनो नातो एटले संबंध न राखतां जे हरिथी ज नातो राखे ते 'साधु' पुरुष अथवा 'हरिभक्त' कहेवाय.

(२) दुकाने-दुकाने कांइ हीरा वेचाता नथी; हीरा वेचनार झवेरीनी दुकानो तो थोडी ज होय छे. कंचन एटले सुवर्णना कांइ पहाड होता नथी. सिंहनां टोळां फरतां नथी; सिंह तो रडयाखडया ज जोवाय छे. तेम हीरा-सुवर्ण अने सिंहनी सरखामणीमां मुकाय एवा संतो पण रडयाखडया ज जोवामां आवे छे. एनां कांइ टोळे-टोळां भटकतां जोवामां आवशे नहि.

(३) 'सब को' एटले सर्व कोइ एम ज कहे छे के 'अमे संत छीए-अमे संत छीए' अथवा 'अमारा गुरु संत छे.' परन्तु

सुराका तो दल नहिं, चंदनका बन नाहिं;
सब समुद्र मोति नहिं, युं हरिजन जग मांहि. ४

चार चिन्ह हरिभक्तके, प्रगट दिखाइ देत;
दया धर्म आधिनता, पर दुःखको हर लेत. ५

संत कांइ रस्तामां आथडता नथी, ए तो समुद्रनी पार छे. एटले के जेम बिलायत के एवो कोइ देश जोवो होय तो समुद्र ओळंगवानी तकलीफ सहवी पडे छे, त्यहारे जोवाय छे. तेम घणी तकलीफे कोइ रडयोखडयो संत मळी आवे छे. जेम के, गुप्त पांखोवाळा गरुड-पक्षी तो कोइक ज होय छे, पण देखाती पांखवाळा पक्षीओ हजारो-क्रोडो होय छे. पण ते पक्षीओ कांइ आखो समुद्र तरी शके नहि.

(४) शूरवीर पुरुषनां कांइ टोळेटोळां होतां नथी. लश्करमां पण थोडा ज पुरुषो खरेखरा शूरा होय छे, जेमनी हाजरीथी बीजा सैनीकोने शुरातन च्हडी आववाथी लडे छे. वळी चंदन एटले सुखडनां झाडनां कांइ वन होतां नथी; अने मोती कांइ बधा समुद्रमां पाकतां नथी; तेमज हरिजन अथवा साचा संत तो जगमां ठेरठेर नथी मळता.

(५) हरिभक्तने ओळखवा माटे सामान्य रीते चार चिन्हो याद राखवां. (१) दया (२) धर्म अथवा कर्त्तव्यपरायणता (३) नम्रता (४) परायां दुःखो दूर करवानी तत्परता. आ गुणो वडे 'संत' ओळखी शकाय. हवे वांचनाराओए पोतपोताना गुरुओमां आ चार गुणो शोधी कहाडवा माटे खुणा-खांचरा जेटला ढुंढाय तेटला ढुंढी जोवा अने पछी गुरु खरे ज 'संत' छे एम खात्री थाय तो त्हेने पोतानो मालीक मानी सर्वस्व अर्पण करवुं; अने जो दया खरेखरी न होय, पोतानी फरज बजाववामां अप्रमत्त दशा न होय, नम्रतानी

एक घडी आधी घडी, भाव भजनमें जाय;
सत संगत पलहि भली, जमका धक्का न खाय. ६

कबीर सेवा दो भली, एक संत एक राम;
राम है दाता मुक्तिका, संत जपावे नाम. ७

जगाए अहंपद होय, पारकां दुःखोनो ख्याल पण हृदयमां न होय; आवुं जणाय तो एवा गुरुने, कबीरजीए बीजी जगाए कह्युं छे तेम, जंगल वच्चे आवेला कोइ उंडा कूवामां नाखी देवा, के जेथी ते गुरु बीजाओने पण डूबावता बंध थाय !

(६) भजनना बे प्रकारः (१) द्रव्य भजन (२) भाव भजन. 'द्रव्य भजन' तो बहारथी भगवाननी स्तुति करवी ते, स्तवन गावां ते. अने ' भाव भजन ' एटले मनथी भगवानमां लीनता करवी ते. एवी लीनता जो एक घडी के मात्र अडधी घडी ज थाय तो ते माणसने जमना धक्का बहु न खावा पडे. 'भाव भजन' करतां पण जो सत्संगतनो जोग मळी जाय तो जोइ ल्यो मजाह ! अडधी घडी नहि पण एक पल मात्र जो सत्संगत मळे तो एथीए वधारे लाभ थाय; कारणके आपणी मेळे जे 'भाव भजन' करीए ते करतां संते बतावेली कुंचीवडे भजन करीए ए हजारगणुं वधारे असरकारक नीवडे, ए देखीतुं ज छे.

(७) कबीरजी कहे छे के 'सेवा' करवी तो बेनी ज करवीः कां तो 'संत'नी अने कां तो रामनी. वच्चे अधकचरीआ पुरुषोनी के पत्थरनी सेवा करवाथी कांइ दहाडो वळे नहि. राम मुक्तिना दाता छे, अने संत छे ते राम नाम बराबर जपवानी रीत बतावे छे, रामनी ' पीछान ' (introduction) करावे छे.

निराकार हरि रुप है, प्रेम प्रीत सें सेव;
जो मागे आकारको, तो संतो प्रत्यक्ष देव. ८

संत वृक्ष हरि नाम फल, सतगुरु शब्द बिचार;
ऐसे हरिजन ना हते, तो जल मरते संसार. ९

प्रिय वाचक ! वेठ कहाडवा बेठा हो अेवी रीते वांचशो नहि; कबीरजीनां क्रोड क्रोड रुपीआनी किमतनां कथन कान दइने सूणजो.

(८) हरि एटले परमात्मा तो निराकार छे; एने कांइ पुष्पादिथी पूजी शकाय नहि. एनी सेवा तो प्रेमरुपी प्रीतिथी ज थाय. एटले के अंतःकरणमां एना उपर प्रेम आववाथी ज एनी सेवा थइ गइ. परन्तु जो कोइ माणसथी 'निराकार'नी सेवा न बनी शके तेम होय अने 'साकार'नी सेवानी जरुर होय तो निराकार एवा जे परमात्मा तेहेनुं आकारवाळुं स्वरुप एज 'साधु पुरुष' छे एम मानी साधुनी सेवा करवा दो. कारणके 'साधु'मां 'परमात्मा'ना गुणोनी वानगी छे.

(९) अहीं कबीरजी स्पष्ट खुलासो करे छे के, संत रुपी वृक्ष छे, तेहेनुं 'हरिनाम' ए फळ छे. सत्गुरुनो शब्द एज परमात्मानो शब्द छे. आवुं वृक्ष जो आ दुनियामां न होत तो संसार तापथी बळी मरत. वृक्ष एने शीतळता आपे छे.

'कहेणी' साथे 'करणी'

अथवा

'ज्ञान' साथे 'क्रिया'.

'ज्ञान अने क्रियाथी मोक्ष छे' एम जे कहेवाय छे त्हेनो अर्थ केटलाक एम करे छे के प्रथम ज्ञान थाय अने पछी क्रिया थाय. परन्तु खरो अर्थ ए छे के ज्ञानपूर्वक--समजपूर्वक क्रिया करवी, तो ज मोक्ष मळे. मतलब के मोक्ष तो क्रियाथी ज छे, मात्र समजवाथी नहि; पण ते क्रिया देखादेखीथी के स्वार्थथी थती न होवी जोइए, संपूर्ण विवेक साथे--ज्ञानपूर्वक होवी जोइए. वळी ध्यानमां रहेवुं जोइए के 'क्रिया' एटले ' Ceremonials '--'विधि'ओ एवो अहीं अर्थ नथी; पण Action एटले 'कार्य' एवा रुपमां छे.

माणस एक वात खरी माने पण वर्तनमां ते खरी बातनो अमल न करे तो तेथी कांइ मोक्ष न मळे. अलबत आटलुं तो खरुंज छे के 'जाणपणुं' ए पण म्होटी वात छे. जाणपणुं हशे तो कोइक दिवस तदनुसार क्रिया--वर्त्तन पण थशे. तेटली अपेक्षाए मात्र जाणपणुं धरावता पुरषो पण अपमानने लायक तो नथी ज. परन्तु जेओ म्होटी म्होटी वातो मात्र पोताना ज्ञाननुं प्रदर्शन करवाने माटे करे अने वर्त्तनमां छेक ज नीची पंक्तिए जइ बेसे, मतलब के एक सामान्य माणस पण न करे एवां दुष्ट कामो करे एवा माणसो तो खरेखर धर्मने लजवनारा ज गणाय. एवाना संबंधमां कबीरजीना चाबखा बहु विचारवा जेवा छे. आपणे ते हमणां ज जोइशुं.

कहता पर करता नहीं, मुंहका वडा लबार;
काला मुंह ले जायगा, साहबके दरबार ! १

कहना मीठी खांड है, करना बिखकी लोय;
कहेनी त्युं रहेनी रहे, बिखका अमृत होय. २

जैसी वानी मुख कहे, तैसी चाले नाहीं;
मनुष्य नहीं वो स्वान है, बांधे जमपुर यांही. ३

(१) जे माणस कहे छे तेवुं करतो नथी ते मुखनो लबाड छे. परमात्माना दरबारमां ते पोतानुं काळुं मुख लइने जशे. (जैनोना 'किल्मीपी देव'नी मान्यता साथे आ विचार सरखाववा जेवो छे.)

(२) कहेवुं ए तो खांड खावा जेवुं काम छे, पण करवुं ए तो विषनी लुगदी खावा जेवुं कठीन काम छे. जे माणस कहेणी--रहेणी एकसरखी राखे छे ते तो विषने पण अमृत करी शके छे. आ वाक्यना बे अर्थ थइ शके. रहेणी--कहेणी बन्ने जेनामां होय तेवा पुरुषो, एटले के 'ज्ञानपूर्वक क्रिया' करनारा पुरुषो, एटले के ज्ञान, दर्शन अने चारित्र त्रणे जेनामां छे एवा पुरुषोने अमुक लब्धिओ, वगर इच्छाए ज, स्वाभाविक रीते उत्पन्न थाय छे, जेने प्रतापे विषनुं अमृत पण थइ जाय ए कांइ ताजुब थवा जेवुं नथी. बीजो अर्थ एवो थाय के, एवा पुरुषो आगळ झेर जेवा शब्दो के बनावो आवे त्हेने पण तेओ अमृत जेवा मानी ले, पण क्रोध के आत्मक्लेष न ज करे.

(३) जे माणस बोले कांइ, ने चाले कांइ, त्हेने 'माणस' नहि पण 'कूतरो' समजो. तेवो माणस अहीं--आ दुनीआमां ज जमपुरी बनावे छे. आ बहु समजवा जेवी बाबत छे. सामान्य 'इच्छाओ' अथवा वासनाओ तो थोडा ज्ञानथी पण दूर थइ जाय

कथनी वकनी छोड दे, रहेनीसे चित्त लाय;
निरखी निर पीये विना, कबहु प्यास न जाय. ४

कथते-बकते मर गये, मूरख कोट हजार;
कथनी काची पर गइ, रहेनी रही सो सार. ५

छे; पण जे तीव्र वासनाओ घणुं जाणपणुं थवा छतां पण छूटे नहि ते वासनाओ तो खरेखर तेजस् शरीरने घणुं ज कदरुपुं बनावी देछे अने ते सूक्ष्म सृष्टिमां यम जेवी आकृतिओ धारण करी पेला 'कहेणी पर करणी नहि' वाळा पंडीतने अनेक रीते पजवे छे.

(४) हे भाइ! तुं बहु बोलवुं जवा दे; करणी तरफ चित्त लगाड. मतलब के दंभ जवा दे अने त्हने जे खरुं जणाय ते करी बताव. त्हारुं वर्त्तन निर्मळ बनाव. उच्च चारित्र (Character) खीलव. पाणी निर्मळ छे के नहि ते तपासवुं जरुरनुं छे ए वात हुं कबुल राखुंछुं; पण पाणी निर्मळ होवानी खात्री थया पछी त्हेने गळे उतार्या वगर कांइ तरस मटवानी नथी. जाणवुं तेमज करवुं ए बन्ने क्रिया वगर कांइ दारिद्र दूर थवानुं नथी. पाणीने बदले उतावळथी झेर पीधुं होत तो पण जीव जात; माटे जाणपणुं शुद्ध जोइए. तेमज पाणीनी खात्री थया पछी त्हेने जोयां ज करे-पीए नहि तो पण तरसथी जीव जाय.

(५) कथता--बकतां तो क्रोड हजार उपदेशको मरी गया; त्हेमांना कोइनुं नामनीशान पण आजे रह्युं नथी. कारणके 'कथनी' थोडा वखतमां 'काची पडे छे'--देवाळुं फूंके छे. पारका रुपीआ लावीने सराफुं करे ते केटलो वखत चाले? घरमां मुडी होय तो ज सराफुं लांबो वखत चाली शके. रहेणी तो घरनी लक्ष्मी छे-अंतरनी मीलकत छे. अंतरमां संपूर्ण पवित्रता सिवाय शुद्ध रहेणी होय ज

जैसी बानी मुख कहे, तैसी चाले चाल;
साहेब संग लगा रहे, तब ही होय नीहाल. ६

नहि. माटे रहेणी तो हजारो वरस सुधी जगतना जीवोने उपदेश करनारी थइ पडे छे. लॉन्गफेलो नामनो कवि बराबर कहे छे केः–

Lives of great men all remind us,
We can make our *lives* sublime,
And, departing, *leave* behind us
Footprints on the sands of time;
Footprints, that perhaps another
Sailing o'er life's solemn main
A forlorn and shipwrecked brother
Seeing shall take heart again.

आ लीटीओनुं भाषान्तर हिंदीमां म्हारा मित्र श्रीयुत गिरिधरशर्माअे नीचे मुजब कर्युं छेः—

जीवनचरित्र महापुरुषोंके हमें नसीहत करते हैं:
"हम भी अपना अपना जीवन स्वच्छ रम्य कर सकते हैं."
हमे चाहिये हम भी अपने--बना जांय पद--चिन्ह ललाम--
इस जगतकी रेतीपर, जो वक्त पडें आवे कुछ काम.
देखदेख जिनको उत्साहीत हों पुनि वे मानव मति धर
जिनकी नष्ट हुइ हो नौका चट्टानोंसे टकरा कर.
लाख लाख संकट सह कर भी फिर भी हिम्मत बांधे वे,
जाकर मार्ग मार्ग पर अपना 'गिरिधर' कारज साधें वे.

महात्माओना शब्दो जेटली असर नथी करता तेटली असर त्हेमनां मुंगां आत्मभोगनां कृत्यो--जगसेवानां कार्यो करे छे.

(६) जेवुं बोले तेवुं ज करे अने परमात्मानी साथे ज पोते छे एवुं भान (Consciousness) क्षण मात्र न भूलतां दरेक काम ते भान साथे ज करे ते माणस नीहाल थाय, त्हेनो बेडो पार उतरे. लॉन्गफेलो बराबर ज कहे छे केः—

कथनी कथे सो पुत हमारा, वेद पढे सो नाती;
रहनी रहे सो गुरु हमारा, हम है ताके साथी. ७

Work, work in the living present:
Heart within, and God overhead.

वातो करवानुं काम नथी, काळजुं ठेकाणे राखीने अने परमात्माने शिर पर राखीने आजे–आजे ज काम करो. 'कर्मयोग'नी आ हीमायत बहुज उत्तम छे. ईश्वर आवो छे ने तेवो नथी, ईश्वर छे के नथी, ईश्वर कर्त्ता छे के नथी, एवी बूमो पाडनाराओ पोताने जे कांइ खरुं लागतुं होय तेटलुं पण जो करवा मांडता होय–अने लॉन्गफेलोनी सलाह प्रमाणे काळजुं ठेकाणे राखीने करवा मांडता होय, तो करतां करतां वधुं ज्ञान मळी रहेशे. जे जेने लायक छे तेहेने ते मळ्या वगर नथी ज रहेतुं.

(७) पोतानी बुद्धि मुजब कथनी कथे ते माणस कबीरने मन 'छोकरा' जेवो छे; एथी आगळ वधीने जे माणस 'वेद' भणे ते कबीरनो 'नातीलो' छे; अने एथीए आगळ वधीने जे माणस आचारशुद्धि अथवा उच्च चारित्र पाळे छे ते तो कबीरने मन 'गुरु' छे. आ बहु समजवा जेवुं छे. कथनी कथनार कबीरना पुत्र समान छे एटले के ते माणस कम अक्कलनो—छोकरमत छे अने तेहेनी तो कबीरजी पोताना पुत्र जेटली दया खाय छे. जे माणस वेद भणे छे एटले (विद् = जाणवुं; 'वेद' एटले ज्ञाननो संग्रह) जे माणस ज्ञाननां पुस्तको भणे छे ते कबीरजीनो 'नातीलो' एटले एक ज वर्गनो होय एम कबीरजी (विवेकने लीधे) कहे छे. जो के पोते ते स्थितिथी आगळ वधी गया छे तो पण पोतानी वडाइ करवी पसंद न होवाथी कहे छे के हुं पण हजी

दुष्ट करनी छूटे नहीं, ज्ञान ही कथे अगाध;
कहे कबीर वे दासको, मुख देखे अपराध. ८

रहेनीके मेदानमें, कथनी आवे जाय;
कथनी पिसे पिसनां, रहेनी अमल कमाय. ९

'अभ्यासी' छुं. अने निरभिमानपणे महात्मा कबीरजी उमेरे छे के, जे माणस उच्च वर्त्तनवाळो छे ते तो म्हारो 'गुरु' थवा लायक छे. आनुं नाम निरभिमान वृत्तिनो उपदेश ! जेवो उपदेश तेवुं वर्त्तन !

(८) जे माणस 'अगाध' ज्ञाननी वातो करे अने ते छतां एनां (सामान्य खराब कृत्यो न सुधरे ते तो जाणे ठीक पण) दुष्ट कृत्यो पण छूटे नहि एवा 'दास' अथवा 'गुलाम' ने माटे कबीरजी कहे छे के, एनुं तो म्हों जोवाथी पण पाप लागे ! आखा प्रकरणमां 'करणी' एटले वर्त्तन (Behaviour) अथवा कर्त्तव्य कार्य (Duty) ए ज अर्थ छे, ए वात भूलवी नहि. कोइ अमुक धर्मनी क्रियाओ (तीलक, पूजन, खमासणां वगेरे) आ शब्दथी समजवानां नथी.

(९) 'रहेणी' नामे एक मेदान छे, ज्यहां 'कथनी' नामनी एक बाइ कोइ कोइ वखत हवा खावा आवे छे. मतलब के मेदान तो एक जगाए कायम रहेवानुं छे, ते कांइ बदलावानुं नथी; पण हवा खानारी जेवी कथनी तो आवे ने जाय. बीजी रीते कहे छे के, कथनी तो 'दासी' छे, ते दळणां दळयां ज करे; अने रहेणी छे ते 'राणी' छे, जे हुकम कर्या करे छे. राणी एक अक्षर बोले नहि अने आंखना इसाराथी कांइ फरमाश करे ते साथे ज सेंकडो दास-दासीओ हुकमनो अमल करे छे; तेम पवित्र वर्तन कोइनामां जोवामां आवे छे के तुरत त्हेनी भ्रुंगी छाप आसपासना हजारो माणसना मन पर पडी

एरणकी चोरी करे, करे सूइको दान;
उंचा चढ कर देखता, कैतिक दूर विमान ! १०

मनमांही फूला फिरे, करता हूं मैं धर्म;
क्रोड कर्म शिरपे धरे, एक न चिन्हे ब्रह्म. ११

स्नान करन तीरथ चले, मन मेला चित्त चोर;
एकही पाप नहीं टर्यो, लाव्या मन दश और. १२

न्हावो धोवो क्या करे ? मनका मैल न जाय;
मीन सदा जलमें रहे, धोवे कलंक न जाय. १३

जाय छे; अने ते असर पण कायमनी रहे छे. पण उपदेशनी असर एटली स्थीर भाग्ये ज रहे छे; ए तो दळणां दळवा जेटली ज आवकनुं काम छे.

(१०) आजकाल लोको केवी जातनो धर्म करे छे ते तो जुओ ! एरणनी चोरी करीने एक सोइनुं दान करेछे; पछी छापरे चढीने जुए छे के हवे म्हाराथी स्वर्गनुं विमान केटलुंक दूर रह्युं छे ? ! घणाए शेठीआओ अनेक अनीतिने रस्ते लाखो रूपीआनी मुडी एकठी करीने पछी थोडाक सो के थोडाक हजारनुं दान करेछे; पण तेथी कांइ स्वर्ग मळे नहि.

(११) मनमां फूलाय छे के हुं तो बहु बहु धर्म करुंछुं ! एवो फुलणसी माथा पर कुकर्मोनो पोटलो तो वधारतो ज जाय छे अने ब्रह्मने ओळखवा प्रयत्न करतो नथी.

(१२) मूर्ख माणस तीर्थस्नान करवा चाल्यो, पण मन तो मलीन छे अने चित्तडुं चोर छे तेथी पाप एक पण टळवाने बदले उलटां दश पाप लइने घेर आव्यो ! वाहरे तीर्थस्थान !

(१३) न्हाये--धोयेथी शुं थयुं ? एथी कांइ मननो मेल

जैसी करणी आपकी, वैसा ही फल ले;
कूडे कर्म कमाय के, सांइयां दोष न दे. १४

(२)

राम झरुखे बैठ कर, सबका मुजरा लेत;
जिनकी जैसी चाकरी, उनको वैसा देत. १

दूर थवानो नथी. एम तो मांछलां आखी जींदगी सुधी जळमां ज रहे छे. माटे स्थूल देह धोयेथी कांइ आत्मानुं कलंक जाय नहि. आ वात तद्दन साची छे. पण ते उपरथी कोइए एवुं नथी समजवानुं के कबीरजी माणस मात्रे स्नान ज न करवुं एम उपदेश करेछे. ना; माणसे पोताना शरीरनी साचवणी माटे आहार, स्नान, निद्रा, उद्यम वगेरे जे कांइ करवुं पडे ते विवेकपूर्वक करवुं ज जोइए. परन्तु कबीरजी तो मात्र एम कहेछे के स्नान करवाथी धर्म थाय छे एवी गेरसमज न धराववी.

(१४) हे भाइ ! जेवी त्हारी करणी (वर्त्तन) तेवुं ज फळ भोगववा तैयार था. कूडां कर्म करीने पछी नाहक परमात्माने शिर दोष न दइश. सुख--दुःख ए मात्र सारां खोटां कर्मनो 'विपाक' छे. अहीं स्पष्ट कहे छे के, बाह्य क्रिया उपर सुख--दुःखनो आधार नथी पण करणी एटले वर्त्तन पर छे.

(१) राम (रम्--रमवुं)--सघळी जगाए रमी रहेलो एवो 'कर्मनो कायदो' (Law of Cause & Effect) बधानो हीसाब पूछे छे अने जेवी जेनी 'चाकरी' (पब्लीक सर्वीश--परोपकारनां कामो) तेवुं तेवुं फळ त्हेने आपे छे. 'कर्मना कायदानी चुंगाळमांथी कोइ बची शकतुं नथी, के त्हेने कोइ ठगी शकतुं नथी.

साहबके दरबारमें, साचेको शिरपाव;
झूठ तमाचा खायगा, क्या रंक क्या राव ! २

सांइयांके दरबारमें, कमी कछु है नाहीं;
बंदा मोझ न पावहि, तो चूक चाकरी मांही. ३

साहबके दरबारमें, क्युं कर पावे दाद ?
पहले कृत्य बुरा करे, फिर करे फर्याद ! ४

(२) परमात्मानो न्याय एवो छे के, साचाने (दुनीआ जेनी किमत न समजी शके एवुं विचित्र प्रकारनुं) इनाम मळे छे; अने जूठाने तमाचा मळे छे, पछी भलेने ते सखस राजा होय के रंक होय ! कर्मनो अचळ कानुन गुप्त रीते काम कर्याज करेछे; ज्यहारे माणसने दुःख पडेछे त्यहारेज ते कानुननी हयातीनुं स्मरण थाय छे.

(३) परमात्माने त्यहां कोइ जातनी कमीना नथी; मतलब के विश्वमां कोइ जातनां सुखोनो टोटो नथी, के जेथी त्हने ते आपतां आंचको खाय. सवाल मात्र एटलो ज छे के, त्हारी ‘ चाकरी ’ मां ‘चूक’ अथवा कचास छे तेथी ‘ मोझ ’ मळती नथी,--सुख अने तुं ए बे वच्चे ‘ अंतराय ’--पडदो आवी रहे छे. छती शक्तिए जेओ दान नथी करता तेओने सुखनी अंतराय पडे छे, एम जैन शास्त्र पण पोकारी पोकारीने कहे छे. छतां चाकरी--जगसेवा सूझती नथी अने ‘मोझ’ एटले सुखनां साधन इच्छे छे एवो मूर्ख आ जीव छे ! पण जाणतो नथी के आ विश्व ए हरिनुं अंग छे; विश्वनी सेवा करशो ते हरिनी ज सेवा छे (कांइ बाह्य क्रिया--पूजा ए सेवा नथी) माटे हरि पासेथी सुख लेवुं होय तो हरिना अंगरुप विश्वना जीवोने साता पमाडवा बनतुं कर.

(४) हे मूर्ख ! त्हने सुख नथी मळ्युं ए माटे तुं परमात्माने

नदी कुदरत दो एक सम, हरकिसीको देत;
जिसका जैसा पात्र हो, उतना वो भर लेत. ५

फर्याद करे छे के? शुं तुं नथी जाणतो के त्हें प्रथम ज बुरां काम कर्यां छे, तो हवे शुं म्हों लइने फर्याद करवी? एने त्यहां तो इनसाफ ज छे; मात्र त्हारी याद्शक्ति त्हारां कुकर्मोने लीधे मारी गइ छे तेथी पाछलां कामो अने आजना बनाव्रो वच्चे जे झीणो पण सळंग तार छे ते तुं जोइ शकतो नथी.

(५) नदी अने कुदरत बन्ने एक सरखां छे; आने आपुं अने आने न आपुं एवो एक्केनो विचार छे ज नहि. खुल्ला मेदान वच्चे नदी धीमो मीठो अवाज करती वह्यां करे छे, के जे अवाज एम बोले छे के "आव्रो अने आ जळ पी शान्त थाओ!" जे 'अहंपद' वाळो माणस नमीने पाणी भरवानुं पसंद न करतो होय ते तरस्यो ज मरे तो त्हेमां नदीनो शो दोष? अने जे माणस एटली नमनताइ बतावी शकतो होय ते माणस पोताना खोबाना प्रमाणमां के पोतानी पासे प्यालो--लोटो के घडो जे कांइ पात्र होय त्हेना प्रमाणमां पाणी लइ शकशे; कोइ ओछुं अने कोइ वधारे. नदीए कोइने ओछुं आप्युं नथी अने कोइने वधुए आप्युं नथी; कोइए वधु लीधुं अने कोइए ओछुं लीधुं. आपनारनो दोष नथी, लेनारनो दोष भले कहो. त्यहां पण लेनारनो 'दोष' न कहो, लेनारनी 'शक्ति' कहो. (लेवानुं सूझ्युं ए पोते ज सद्भाग्यनी नीसानी छे.) तेवीज रीते विश्वमां सुख ज भरेलुं छे, पण ते लेवानी जेटली त्हमारी शक्ति तेटलुं त्हमारुं! त्हमारा घडाने--हृदयने जेम विशाळ बनावशो तेम वधारे सुख एमां झीली शकशो.

जो तोको कांटा बुवे, ताको वो तूं फूल;
ताको फूलका फूल है, वांको कांटा मूल ! ६

कहता हूं, कह जात हूं, देता हूं हेलाः
" गुरुकी करनी गुरु तिरे, और चेलाकी चेला. " ७

(६) जे त्हने कांटो मारे त्हेने पण तुं तो फूल ज मारजे; अर्थात् फूल जेवी सुगंधी याने प्रेमभावना त्हेना तरफ मोकलजे. एम करवाथी त्हने तो फूलनुं फूल ज मळशे अने पेलाने कांटा अने शूळ ज वागशे. कांटो मारनार जे खराब भावनाथी कांटो फेंके छे ते खराब भावना त्हेना सूक्ष्म देहमांथी छूटीने त्हारा तरफ दोडशे पण त्हारा सूक्ष्म शरीरमां तेवी गंदी चीजने रहेवाने जगा न होवाथी (त्हेनुं आकर्षण न थवाथी) ते खराब भावना पाछी जइ ज्यहांथी नीकळी हती त्यहांज पेसे छे. आ रीते ते कांटो त्हेने ज वागे छे. हवे तुं के जेणे त्हेनुं भलुं ज इच्छयुं हतुं एवा त्हारा सूक्ष्म शरीरमांथी छूटेली ते सुगंधमय प्रेम भावना त्हेना शरीरने स्पर्शवा जशे, त्यहां जो ते पोताने लायक खुणो खचको पण जोशे तो तो त्यहां रहीने त्हेने फायदो करशे; अने जो तीलमात्र जगा पोताने लायकनी नहि जुए तो पाछी फरीने पोताना जन्म स्थळनी आबादी-मां वृद्धि करशे. आ हिसाबे त्हने तो फूलनुं फूल ज मळशे.

(७) कबीरजी कहे छे के, हे मनुष्यो ! हुं कहुंछुं अने फरीथी छेवटने माटे कही जाउंछुं—अरे 'हेला' एटला टकोर मारीने कहुंछुं के " गुरुनी करणीथी गुरु तरशे अने चेलानी करणीथी चेलो तरशे. " जे करशे ते पामशे. गुरुनी करणी चेलाने के चेलानी करणी गुरुने कांइ काम लागशे नहि. आपबळ सिवाय सर्व नकामुं छे. गुरु कांइ विमान आपी शकता नथी; ते तो पोतानुं विमान पोते

कबीरने नीज घर किया, गलकट्टोंके पास;
करेगा सो पावेगा, तुं क्युं भया उदास ? ८
एक हमारी शिख सुन, जो तुं हुवा है 'शेख';
करुं करुं तुं क्या कहे ? क्या क्या किया है देख. ९

बनावी गया अने शिष्यने कहेता गया के आम विमान बनावाय; तुं पण गरज होय तो आवी रीते हाथ–पगने श्रम आपीने विमान बनावजे, एटले मोक्षधाम पहोंची शकीश.

(८) कबीरजीए पोतानो रहेवास गलकट्टा लोकोनी पासे राख्यो हशे ते उपरथी कोइए पूछ्युं हशे के, तहमे आवा पवित्र पुरुष थइने आवी अधम जगामां केम रहोछो ? त्हेने कबीरजी कहे-छे केः " करशे ते पामशे; एमां हे भाइ ! नाहक तुं केम उदास थाय छे ? " मतलब के गलकट्टा लोको जे पाप करशे ते त्हेमने नडशे, एमां म्हने शुं ? बीजो अर्थ ए छे के, हुं आमनुं जोइने कुकर्म शीखीश तो त्हेनां फळ हुं भोगवीश, परन्तु तुं नकामो आवी हांशी करीने पापमां शुं काम पडे छे ? खराब [स्थ]ळतामां न रहेवुं ए नियम सामान्य माणसे हशी कहाडवा जेवो नथी, मात्र महान गुणोने खीलवी महात्मा बनेलाने माटे एवा नियमनी कशी जरुर नथी. कारण के एमनी आसपास शुभ विचाररुपी हीरा–माणेकनो मजबुत कोट बंधायलो होय छे, जेने लीधे खराब वातावरण असर करी शकतुं नथी. बाकी सामान्य माणसने तो निर्दय के व्यसनी मनुष्योनी सोबतनुं वातावरण जरुर थोडुंघणुं नडे ज. माटे म्होटा पुरुषो करे ते ज करवुं एम न समजतां, म्होटा पुरुषो पात्रता जोइने कहे ते ज करवुं जोइए.

(९) ओ शेख साहेब ! ओ गुरु महाराज ! आ गरीबडा कबीर एकजनी शिखामण सांभळवानी महेरबानी करशो ? गुरु-

जब तूं आयो जगतमें, लोक हस्या तूं रोय;
ऐसी करनी मती करो, के पीछे हसे कोय. १०

महाराज, त्हमे कहोछो के हुं आ करुं ने हुं ते करुं ने हुं फलाणुं करुं; पण भला माणस! आज सुधीमां शुं शुं कर्युं ते जरा हैयुं उघाडीने जुओने! वायदानो व्यापार (सट्टो) छोडी रोकडीओ ज करोने! त्हमे जो आज सुधीमां कांइ सारुं काम न करी शक्या हो तो हवे पछी पण शुं उकाळवाना हता? (कबीरजी तो गुरुना गुरु बनीने चाबखा लगाव्या ज जाय छे, रखेने कोइ नवळो आ चाबखाना मारथी चीतामां जाय!)

(१०) हे भोळा! ज्व्हारे तुं आ जगतमां आव्यो अर्थात् जनम्यो त्व्हारे तुं तो रोतो हतो अने लोको हसता हता! त्हने एवा विचारथी रडवुं आवतुं हतुं के आ उत्तमोत्तम ओजार रुप मनुष्य खोळीउं पामुं तो छुं, पण एनो सारो उपयोग करीने शाबाशी नहीं मेळवाय तो बहु दुःखी थवुं पडशे. ए विचारथी तुं रोतो हतो. अने लोको एम धारीने हसता हता के, आपणे तो आ दुनीआनी हवा लागवाथी स्वार्थी बनी बेठा पण आ नवो--ताजो जीव आवे छे ते निर्मळ रहीने जगसेवा बजावशे, तेथी आपणुं पण काम थशे! माटे हवे हे भाइ! एवी करणी कदी न करीश के जेथी त्हारा मृत्युने लीधे लोको एम बोलवा प्रेराय के "सारुं थयुं के आ मुओ!" त्हारा मरणथी खोट पडी एम लोकोने जणाय तो ज त्हारुं जीववुं सफळ छे. (अहीं पण शुद्ध 'कर्मयोग'नो उपदेश झळकी रह्यो छे. वाहरे कर्मयोगी कबीरजी!)

ना कछु किया, ना कर सका, ना करने जोग शरीर;
जो कुछ किया हरिने किया, ताते भये कबीर. ११

(११) कबीरजी कहे छे के, हुं आजे जे छुं ते सर्व हरिनो प्रताप छे; म्हें कांइ कर्युं नथी, हुं करी शक्यो नथी अने करवा जेवुं म्हारुं शरीर पण नथी. पण हरिए आ शरीरद्वारा जे कांइ कर्युं होय त्हेमां आ शरीर शानो गर्व करे? म्हें कोइनुं कांइ काम कर्युं होय तो ते हरिनी प्रेरणाथी आ हाथ–पग चाल्या अने काम थयुं, त्हेमां हाथ–पगने शानो यश? कोइने उपदेश दीधो ते हरिए प्रेरणा करी ते मुजब जीभ बोली गइ; एमां जीभडी नकामी शाने फूलाय? कबीर महात्मा कहेवायो पण ते तो एक खोखुं छे, महात्मा तो प्रभु छे, के जे कबीरना शरीरद्वारा महात्मापणानो खेल भजवीने जगतने शीखामण आपे छे. (वाहरे 'त्याग' वृत्ति वाह! दोलत वगेरे तो त्यज्युं ते त्यज्युं पण कामनो यश पण त्यज्यो,–अरे 'हूं' ने ज समूळगुं त्यज्युं! म्हारो कबीर गुरु तो भगवानथी एकरूप थइने कहे छे के "ते तो भगवाने कर्युं!" पण भला कबीर! आवो महंत थइने जूठुं कां बोले छे? तुं अने त्हारो प्रभु बे एकरूप हो, तो त्हारा प्रभुए करेलुं ते त्हारुं करेलुं केम न कहेवाय?)

आनुं ज नाम 'कर्म योग' छे; कर्म एटले कर्त्तव्य कर्म–जे कांइ दुनीआमां पोताने करवा जेवुं जणाय ते विश्वहितार्थे करीने दूर थइ जवुं, फळ इच्छवुं नहि अने फळ पोतानी पेदाश छे एम पण न मानवुं, ए कर्मना वळगाटथी दूर रहेवानो एकनो एक ज रस्तो छे. एने कर्म केम करी वळगे?

सबी रसायन देखीया, हरिसा एक न होय;
रति एक घटमें संचरे, सब तन कंचन होय. १२

(१२) कबीरजी कहे छे के, म्हें बधां रसायण जोयां-तपास्यां-अजमाव्यां; पण हरि नामना रसायण जेवुं तो एक पण रसायण म्हारा जोवामां आव्युं नहि. वैद्यो गमे तेटलुं रसायण खवरावे तेथी कांइ शरीरनो एक वाळ पण सोनानो बनी जतो नथी; पण परमेश्वर रुपी रसायणनी एक रति मात्र जो 'घट'मां (स्थूळ शरीरमां नहि पण सूक्ष्म शरीरमां) संचरवा पामे तो ते आखुं शरीर कंचनमय बनी जाय छे. (सरखावो तीर्थंकरना त्रीगडा गढनी कल्पना.) जेनुं मन हरि साथे ज लागेलुं छे, जे आखा विश्वने हरिनुं अंग समजे छे अने जे पोते हरिनी भक्ति अथवा विश्वसेवा माटे ज जन्म मळ्यो माने छे तेवी मान्यतावाळा माणसनुं कार्मण शरीर घणुं ज प्रकाशीत थाय छे.

जैनधर्ममां कहेली ' लोक भावना ' जे बराबर समज्यो छे (भूगोळ-खगोळ तरीके नहि पण अध्यात्म तरीके) ते माणसनुं कार्मण शरीर अति प्रकाशीत थाय एमां पूछवुं ज शुं होय ?

मगजनी पंडीताइ विरुद्ध हृदयनी पवित्रता.

ब्राह्मन गुरु जगतके, संतनके गुरु नाहिं;
उलट पलट कर डूबया, चार बेदके मांहि. १

बेद सभी पढ पढ मरे, हरिसे नाहि हेत;
माल कबीरा ले गया, पंडित ढूंढे खेत ! २

पढी गुनी 'पाठक' भयें, समझाया सब संसार;

---

(१) ब्राह्मण एटले जेने लोकोए 'धर्मगुरु' तरीके मानी लीधेला छे तेवा लोको तो जगतना एटले साधारण लोकोना गुरु छे; अथवा जडमां सर्वस्व मानी बेठेला दुनीआदारीना लोकोने माटे ए गुरु छे. कांइ 'संत' ना ते गुरु नथी. कारण के जगतना गुरुओ तो वेदने एटले धर्म शास्त्रोने उलटपालट गुंथीने पोतानी पंडीताइ बतावी जाणे एटलुं ज; एमनामां कांइ 'पवित्रता' ओछी ज छे ! मगजना गुण छे, पण हृदयना गुण नथी; माटे एवाने 'पंडीत' भले कहो, पण 'संत' के 'गुरु' न कहेशो.

(२) एवा 'पोथीमांना रींगणां' जेवा धर्मगुरुओ सघळां धर्मशास्त्रो भणीभणीने म्होटा पंडीत बन्या पण हजी एमना हृदयमां हरि तरफ हेतनी लागणी थवा पामी नहि; अर्थात् खरो माल जे 'भक्ति' ते तो त्हेमने जडयो पण नहि; ए खरो माल तो कबीरो लई गयो, अने पंडीतजी तो खेतरमां ढुंढता ज रह्या ! बीजा शब्दमां कहीए तो, आ भाषाज्ञानना पोपटीआ पंडीतो मात्र बहारने बहार ज परमात्माने शोधता फरे छे तेथी जींदगी नकामी जाय छे अने कबीराए तो परमात्माने प्रथम पोताना जीगरमां शोधी कहाडया अने त्यहांथी पछी आखा विश्व उपर फेलायला जोया.

आपन तो समजे नहिं, वृथा गया अवतार. ३

पढी गुनी ब्राह्मन भयं, कीर्त्ति भई संसार;
वस्तुकी समजन नहिं, ज्युं खर चंदन भार. ४

पढत गुनत रोगी भयें, बढ्या बहुत अभिमान;
भीतर भडका जगतका, घडी न पडती शान. ५

(३) भणीगणीने 'पाठक'--उपदेशक बन्या अने आखा जगतने उपदेश करवा लाग्या पण पोते तो हजी कांइ पण समज्या नहि; तो एवा उपदेशकनो अवतार नकामो ज गयो समजवो.

(४) भणीगणीने 'ब्राह्मण'--'ब्रह्मज्ञ'--पंडीतजी बन्या, अने संसारमां कीर्ति मेळवी के फलाणा भाइ तो म्होटा काशीना पंडीत थया अगर फलाणा तो म्होटा 'आचार्य' थया के फलाणा तो 'महापुरुष पंडीतराज' थया; पण 'वस्तु' नी समजण हजी पडी नथी अर्थात् 'सत्' नुं पीछान हजी एने थयुं नथी--शास्त्रोना अक्षर गोखी मारवा छतां अने लांबा लांबा टीका—टब्बा वांचवा छतां हजी ए शब्दोमां छूपायलुं गुप्त रहस्य ते शोधी शक्यो नथी—माटे ज कबीरजी कहे छे के ! हे खर, हे गद्धा ! आ विद्या रुपी चंदननो भार त्हारा मातेला शरीर उपर तुं भरे छे तेथी त्हमने शो लाभ थवानो छे ? तुं त्हेनी सुगंध तो लइ शकतो नथी; तो पण कदाच बीजानुं वैतरुं करवा माटे—बीजाना माटे आ भार उपाडतो होइश !

(५) बहु बहु भण्या तो शुं मळ्युं ? मात्र अभिमान रुपी दरद ! एनुं सूक्ष्म शरीर तपासो तो जणाशे के त्हहां तो जगतना पदार्थोनी इच्छा रुपी अग्नि प्रज्वलीत होय छे. स्त्री नामथी ओळखातो स्थूल पदार्थ छांडयो हशे पण त्हेना सूक्ष्म शरीरमां स्त्रीनी लालसा तो

पढें गुनें सब वेदको, समझे नहि गमार;
आशा लागी भरमकी, (ज्युं) करोलियाकी जाळ. ६

पंडित पढते वेदको, पुस्तक हसती लाड;
भक्ति न जानी रामकी, सभी परीक्षा बाद. ७

भडके भडकारुपी बळती होय छे; त्रांबा-रुपा नाणुं त्यज्युं हशे पण नाणाथी मळती चीजो तो अनेक प्रकारनी भोगवे छे अने त्हेनो लोभ पण असाधारण राखे छे--एटले सुधी के पोतानुं मानेलुं एक बे बदाम किमतनुं पात्र पण कोइ बंधुने लेवा नहि दे; अभिमान न उत्पन्न थाय एटला माटे घर-बार अने स्त्री वगेरे छोडयुं पण अभिमान तो पहेला करतां बमणो वध्यो: आम तेजस् शरीरमां अनेक इच्छाओनी आग बळती ज होय छे. अने एथी बचवानुं भान घडी पण आवतुं नथी.

(६) सघळांए धर्मशास्त्रो भण्यो, पण गमारने हजी कांइ समज पडी नहि. शास्त्रोमां मनुष्यना विविध शरीरो शुं छे अने आत्माने ते केवी रीते ढांकी रह्या छे अने त्हेमनी खीलवट केम थाय-आत्मानुं प्रकटीकरण केम थाय ए सर्व वांची गयो, छतां हजीए दुनीआना पदार्थो अने दुनीआना भावोनो जे भ्रम त्हेनी आशा तो लागी ज रही! जाणे के करोळीआनी जाळमां कोइ जीव फसाइ गयो होय तेम आ पंडीतजी उपर पण मायाना तार आडा अने अवळा फरी वळ्या छे, वींटाइ गया छे, त्हेने ते आटआटलुं ज्ञान थवा छतां भेदी शकतो नथी.

(७) पंडीतजी-धर्मगुरु महापुरुष पंडीतराज एक वखत शास्त्र-सूत्र वांचवा बेठा. ते वखते पोथीबाइ (चोपडी) लाड करीने हसवा लाग्यां अने बोल्यां के " अहो पंडीतजी! हवे त्हमे परीक्षा आप-

संस्कृतमें पंडित वदे, वहुत करे अभिमान;
भाषा ही के जोरसे, तर्क करे नादान. ८

वानी तकलीफ फरीथी लेशो ज नहि; कारण के रामनी भक्ति त्हमने आवडी नहि तेथी त्हमे एकवार तो बधा विषयनी परीक्षामां नापास थइ चूक्या छो. अने नापास थयेलो विद्यार्थी जो थोडुं जाणनारो होय तो बीजी वार तैयार थइने पण परीक्षामां बेसी पास थइ शके. पण त्हमे तो हजी विद्यार्थी अवस्थामां ज—अरे एकडीआं शीखोछो एटलामां ज 'महापुरुष पंडीतराज' बनी बेठाछो माटे त्हमारे हवे कांइ शीखवानुं रहेतुं ज नथी!" वाहरे पोथीबाइ! त्हमेए खूब करी! अने हरिना भक्त कबीरजी! पींगल तथा अलंकार शास्त्र भणवाने पंडीतो पासे गया सिवाय पण त्हें खुब कल्पनाने दोडावी!

(८) जेनी पासे थोडुं नाणुं होय छे ते शरीर अने घरनो ठाठ माठ कांइ ओर ज राखे छे अने तीजोरीनी अंदरनो ठाठ तो ज्ञानी जाणे एवो होय छे! श्रीमंतो सफाइ राखशे पण डोळ--दंभ नहिज ज करे, तेम जेओ मात्र 'भाषाज्ञान' पामीने पंडीत थइ बेठा छे तेओ बेचार माणसने एकठा थयेला भाळ्या के संस्कृत भाषामां के संस्कृतमय मातृभाषामां लवारो करवा मंडी पडशे, जाणे के एना जेवा पंडीत दुनीआ भरमां छे ज नहि. आवा नादान माणसो—अक्कल वगरना बाळको मात्र भाषाज्ञानना जोरथी तर्क--न्याय शास्त्रमां माथुं मारे ए केवी हसवा जेवी वात छे! भाषा ज्ञान ए मात्र एक हथीआर छे, नहि के लक्ष्यबिंदु. भाषाज्ञानमां घणा आगळ वधेला पाश्चिमात्य विद्वानो जैन अने ब्राह्मण ग्रंथोना सुंदर भाषांतर करवा छतां कदी जैन के ब्राह्मण बन्या नहि अने उलटा 'धर्म' चीजने हांशीरुप गणे छे. हवे भाषाज्ञान एकलानी किंमत शुं आंकवी ए विचारवंत पुरुषो पोते ज विचारी लेशे.

आत्मदृष्टि जाने नहिं, नाहवे प्रातःकाल;
लोक लाज 'विध' सहु करे, लगा भरम कपाल. ९
तीरथ और सब व्रत करे, उंडे पानी न्हाय;
राम नाम नहिं जपे, काल ग्रसी ले जाय. १०
काशी कांठे घर करे, न्हावे निर्मळ नीर;
मुक्त नहि हरिनाम विन, युं कहे दास कबीर. ११

---

(९) केटलाक पंडीतो प्रातःकाळमां उठीने स्नान करेछे अने लोक-लाज खातर तीलक तथा पूजा वगेरे विधिओ के जे 'भ्रम'रुप छे ते सर्व करे छे; पण बीचाराने 'आत्मदृष्टि' छे नहि तेथी नकामो भटके छे.

(१०) केटलाक पंडीतो तीर्थ अने व्रत वगेरे करेछे अने उंडा पाणीमां पेसीने स्नान करेछे, पण राम नामनुं तीर्थ कर्युं नहि, रामनुं फरमान (अगीआरमी ' लोकस्वरुप भावना ') ए रुपी व्रत पळायुं नहि, अने रामना प्रेमरुपी उंडा पाणीमां न्हवायुं नहि तेथी ते पंडीतजी काळदेवना कोळीआ थइ जवाना ज ! मतलब के जन्म-मरणना फेरा फर्या करवाना ज.

(११) केटलाक लोको काशी कांठे जइने रहे छे अने गंगाना रसायणीक गुणवाळा स्वच्छ जळमां हमेश स्नान करेछे, पण हरि-नाममां रह्या सिवाय अने हरिनाममां स्नान कर्या सिवाय मुक्ति कोइ काळे मळवानी नथी, एम 'दास कबीर' कहे छे. जे साधुओ पोताना नामनी आगळ पाछळ म्होटां पूंछडां पोतानी जाते लटकावता होय त्हेमणे कबीरजीने पूछी जोवुं के ते पोताने 'दास कबीर' केम कहे छे ? तेमज जे संसारीओ कोइ युनीव्हर्सीटी के सभा के संघ तरफथी पंडीताइना खीताब अपाया सिवाय पोतानी मेळे 'पंडीत'ना खीताब लइ बेठा होय त्हेमणे पण कबीरजी पासे आ वातनो भेद पूछवा पधारवुं ! रस्तो खुल्लो छे !

जप तप तीरथ सब करे, घडी न छांडे ध्यान;
कहे कबीर भक्ति बिना, कबू न होय कल्याण. १२

(१२) केटलाक पंडीतो शास्त्रनुं रहस्य न समजवाथी जप-तप-तीर्थ अने ध्यान एटलां वानां करवामां आखी जींदगी गुजारे छे; पण कबीरजी कहे छे के 'भक्ति' विना एमनुं कल्याण-मोक्ष थाय ज नहि. जप-तप ए 'हठयोग' छे; एथी भले अमुक सिद्धिओ प्राप्त थाय, तेथी कांइ भवभ्रमण अटके नहि. तीर्थपूजन कराय छे ते पण बाह्यभाव छे, अने बाह्यभाव बंध थइने आंतरदृष्टि न थाय त्हां सुधी पण भवभ्रमण अटके नहि. 'ध्यान' उत्तम चीज छे पण जेने बाह्यभाव भरपुर छे तेवा माणसनुं 'ध्यान' पण बाह्य प्राप्तिने अर्थे ज होय छे, तेथी त्हेनुं फळ पुद्गलसमुहनी प्राप्ति एज मळे, भवभ्रमण टळे नहि. कल्याण तो त्यहारे थाय के ज्यहारे भक्ति अथवा Devotion थाय; भक्तिवाळो मनुष्य पोताना तन-मन अने धन सर्व ईश्वरने अर्पीत करे छे; पोतानुं कशुं नथी, मात्र विश्वसेवा माटे सोंपायलां हथीआरो छे अने ते हथीआरो विश्वसेवामांज वपरावानां छे एवो ख्याल भक्तने रगे रगे होय छे. एवा माणसो माटे ज मुक्ति छे, बीजाने माटे नहि. (भक्ति ए शब्दथी कबीरजी कोइ जातनी क्रिया सूचववा इच्छता नथी, तेमज एक खूणे बेसी रही मात्र कालावालाना शब्दोच्चार करवा एने पण 'भक्ति' नाम आपता नथी. वर्त्तनमां भक्ति अथवा भक्तिमय जीवन ए ज एमनो कहेवानो आशय छे. एमने 'साकर' नामथी संबंध नथी, साकर जेवो ज देखातो पथ्थरनो टुकडो के जेने 'सद्भाव' के 'असद्भाव' स्थापनानो सिद्धांत लगाडीने मूर्त्तिपूजको साकर मानी ले ए पण एने पसंद नथी, एने तो म्हों गळ्युं करे एवी अमुक चीजनुं-खुद चीजनुं काम छे. कबीरजी 'कर्मयोगी' छे; अने एमनां 'कर्त्तव्य कर्म'नी इंटो वच्चे गारो 'भक्तिरस'नो छे.

को एक ब्राह्मण मशकरा, वाको न दिजे दान;
कुटुंब सहित नरके चला, साथ लिये जजमान ! १३

कबीर ! पंडित की कथा, जैसी चोरकी नाव;

(१३) कबीरजी एक दातारने चेतवणी आपे छे के, हे भाइ ! तुं दातार थयो ए तो ठीक छे; दाननो गुण उत्तम छे; पण त्हारुं दान अयोग्य पात्रमां न जाय ते संभाळजे ! पेल्लो मश्करो-उखडेल धर्मगुरु छे, त्हेने दान रखे देतो ! कारण के एवा एक धर्म-गुरुने कोइए दान कर्युं हतुं त्हेनुं फळ ए मळयुं के, ते साधु पोताना सोबतीओने लइने नरके गयो अने साथे दातार-दान आपनारने पण लेतो गयो ! गुरु कांइ एकलपेटो न होय, पोताना दातारने नरक जेवी रहेलघामां साथे लीधा वगर रहेज नहि एवो ते परोपकारी होय. माटे हे भाइ ! तुं दान करे तो 'गुण' जोइने करजे, 'वेष' जोइने न करतो.

(१४) कबीरजी कहे छे के, आजकालना 'पोथां पढीत' ना मुखथी धर्मकथा सांभळवी अने आंधळाए चोरनी बोटमां बेसवुं ए बन्ने एकसरखां जोखमभर्यां काम छे. बन्ने लोको मरजीमां आवे ते जगाए पोताना आश्रीतोने भरमावीने लइ जाय अने मरजीमां आवे तेवी व्यवस्था करे ! आ गाथा बहु समजवा जेवी छे. कोइ आंधळाने नदीपार जवुं हतुं तेथी होडीवाळानी मदद मागतो हतो. एवामां अमुक चोर लोको कहेवा लाग्या: " अमारी होडीमां बेसो; अमे त्हमने थोडे खर्चे अने थोडा वखतमां पार उतारीशुं. " विश्वासे सुरदासजी होडीमां बेठा अने पछी पेला लूटारा होडीवाळाए मांहो-मांहे विचार करवा मांडयो. एक कहे: आने लूटीने नदीमां फेंकी दइशुं ? बीजो कहे: छेकज एवुं उघाडुं कुकर्म तो न थाय; जरा दया खाइशुं, दया. आपणे एने आडोअवळो खेंची जइशुं अने एक उज्जड जगामां जइ लूटीने त्यहां छोडी दइशुं. त्रीजो कहे: एम पण

नहि; जे माणस गोळथी मरतो होय एने विषथी शा माटे मारवो ? माटे आपणे एने अडधेक सुधी होडी हंकार्या बाद कहेवु के नदीमां आ स्थळे चमत्कार थयेला छे. ए पवित्र भूमि छे. अहीं कोइ माणस डूबी मरे--आपघात करे तो मोक्षे जाय अने एटली हिमत न चाले अने फक्त पोतानी मीलकत अहीं स्नान करीने खेरीआतमां आपी दे तो देवलोकमां जाय. ते बीचारा आंधळाने पोताना आ भवना दुःखथी कंटाळो आवेलो होवाथी गमे ते शीखामण मानवा तत्पर ज थशे अने आपणो बेडो पार थशे. लूंटाराओए अने आंधळाए पछी शुं कर्युं ते आपणे जाणवानु रहेतुं ज नथी, कारणके एवा संख्याबंध लूटारा आपण अंध पुरुषोने (हृदयनी आंख वगरनाओने) हमेश आवी रीते लूटता आव्या छे तेथी कांइ अनुभव नवो मळवानो नथी. पछी आपणने ज्यहारे परमाधामीना भाला खमवा पडशे त्यहारे कहीशुं के " अरे ओ परमाधामी ! म्हने तुं अहीं केम लाव्यो ? हुं के जेणे गुरुदेवना कहेवाथी पेली विधवाना दिक्षा ओत्सवमां पांचसो रुपीआ खर्च कर्या हता अने पेला उधइओनी दया माटे पुस्तकोना पटारा भरनारा महात्माना हुकमथी पांच रुपीआनां पानां वहोराव्यां हतां अने गुरुना संसार पक्षना बेटाने गुरुदेवनी आज्ञाथी बसो रुपी-आनी कंठी पहेरावी दीधी हती तथा गुरुदेवना दर्शन करवाने चोमासा वच्चे हुं लावलश्कर लइने बीजे गाम जइ चारसो रुपीआ खर्ची आव्यो हतो छतां तुं म्हने अहीं--नरकावासमां केम लावे छे ? म्हारे ते अहीं आववानुं होय ? म्हने तो म्हारा गुरु साथे देवलोक-मां लइ जवामां आवशे एवी आशाए म्हें जीगरथी पण व्हाला एवा रुपीआ खर्ची नाख्या हता ! छतां शुं म्हारां नरकमां लइ जाय एवां पूर्वनां कर्मो धोवायां नहि होय के ? " आनो खुलासो परमाधामी करशे के ?--हा, जे परमाधामी हशे ते अवश्य खुलासो करशे, बीजा नहि ज.

(२)

काम क्रोध मद लोभकी, जब लग मनमें खांन;
तब लग पंडित मूर्ख हि, कबीर एक समान. १
चतुराइ पोपट पढा ! पडा जो पिंजर मांहि;
फिर परमोधे औरकों, आपन समजे नाहिं. २

(१) कबीरजी कहे छे के, ज्हां सुधी मनमां काम–क्रोध–मद–लोभ ए चारनी 'खाण' छे त्यहां सुधी मूर्ख अने पंडीतमां कांइ तफावत समजता ना.एवो माणस भणेलो होय तो पण मूर्ख ज छे; बुद्धिशाळी मनुष्य कदी पोताना सूक्ष्म शरीर के जे वधु किमती छे अने जे बीजा अवतारमां पज साथे रहेनार छे तेना सूक्ष्म शरीरना भोगे स्थूल शरीरनुं मायावी सुख इच्छे ज नहि.

(२) चतुराइ तो एक पोपटना भणवामां आवी छे ! बाकी कोइ चतुर छे ज नहि ! जुओ तो खरा के अभण पोपट आकाशमां उडता फरे छे अने कल्लोल करे छे, त्यहारे भणेला पोपटजी पांजरामां केद थया छे ! आ एमनुं भणतर ! अरे B. A. अने M. A. नी डीग्रीना अभिमानी भणेलाओ ! अरे सूत्रो अने संस्कृत अने ग्रंथो अने थोकडाना अभ्यासना अभिमानी पोपटजीओ ! त्हमे भणीभणीने शुं भण्या ? मात्र मगजने भारे मार्यु ! कारण के हृदय तो भण्युं नहि. मनना प्रणाम कोमळ थया नहि. विश्व मात्र उपर समान दृष्टि, प्रेम भावना तो शीख्या नहि. भणतरथी त्हमारुं हृदय 'तर' थवाने बदले–विकाश पामवाने बदले उलटुं सांकडुं थयुं अने त्हमारां पोतीकां स्वार्थ सुख मेळववानी वधु शक्ति त्हमे पाम्या, के जे शक्ति बीजा ओछा भणतरवाळाना सुखना भोगे त्हमने वधारे (मायावी) सगवडो लावी आपशे. आ भणतर त्हमने पांजरामां--संसारभावमां जकडी राखशे. त्हमे बीजाने शुं उपदेश करोछो, अरे विचारा पोपटीआ पंडीतो ! त्हमे त्हमने तो पींजरामांथी छोडवो ?

हरिगुन गावे हरखके, हिरदे कपट न जाय;
आपन तो समजे नहिं, ओर हि ज्ञान सुनाय. ३
चतुराइ चुल्हे पडो, ज्ञानको जमडा खाओ !
'भाव भक्ति' समजे नहिं, जानपनो जल जाओ ! ४
लीखना पढनां चातुरी, ये सब बातां सहेल;
काम दहन, मन वश करन, गगन चढन मुशकेल. ५
ज्ञानी गाथा बहु मिले, कवी पंडित अनेक;
राम रता और इंद्रि जीता, कोटी मधे एक. ६

---

(३) हरिना गुण म्होढेथी गाया एटले कांइ भक्त थइ गया एम समजवुं नहि. हृदयमांथी कपट जाय त्यहारे ज्ञानी कहेवाय. माटे बगभक्तोनो उपदेश सुणवो नहि.

(४) हे 'चतुर' पुरुषो ! त्हमारी चतुराइ चूलामां पडो ! त्हमारुं ज्ञान जहानममां जाओ ! जो त्हमारामां 'द्रव्यभक्ति' नहि पण 'भाव-भक्ति' आवी होय तो ज त्हमारी पंडीताइ सफल छे, नहि तो देवता मूक्यो ए जाणपणामां !

(५) लखवुं-वांचवुं-चतुराइ करवी ए बधुं स्हेलुं छे-- देखा-देखीथी शीखाय तेवुं छे. पण कामदेवने बाळी नाखवो अने मनने वश करवुं तथा 'आकाशमां चहडवुं' एटलां काम खरेखर मुश्केल छे. ए कांइ देखादेखीथी शीखातां नथी, ए तो जाते ज समजवानां अने जाते ज करवानां काम छे. 'आकाशमां उडवुं' एनो अर्थ भूलोकमां छतां देवलोक तरफ प्रयाण करवुं ते. कल्पना शक्तिने पवित्र बनावीने त्हेनी पांखे बेसी देवलोकमां विचरवुं अने प्रेमना सार्वत्रीक राज्यनी मीठी हवा खावी ते. बीजो अर्थ एवो पण थाय के गुण 'स्थानके' चहडवुं ते; गुणस्थानक कांइ देखाय एवी चीज नथी; आकाशमां चहडवानुं ज ते काम छे.

(६) ज्ञाननी वातो करनारा, कविओ, पंडीनो तो घणाए मळे;

तारा मंडल बैठके, चंद्र बडाइ लाय;
उदय भया जब सूर्यका, सब तारा छुप जाय. ७

कु मारग छोडा नहिं, रहा मायामें मोह;
पारस तो परसा नहिं, रहा लोहका लोह ! ८

पोथी पढपढ जग मुवा, पंडित भया न कोय;
अढाइ अक्षर प्रेमका, पढे सो पंडित होय. ९

पण राममां 'रत' थयेला--राममय बनेला पुरुषो के जेओ इंद्रिओने पोताना वश राखी शके छे तेवा तो करोडोमां एकाद ज मळशे.

(७) ताराओनां टोळां वच्चे बेसीने चंद्र (के जे सूर्यनुं तेज उछीनुं लइने प्रकाशे छे, जेनामां पोतानुं तेज नथी ते) आप बडाइ घणीए करे तेथी शुं वळ्युं ? पण ज्यहारे प्रभाते सूर्यनो उदय थाय छे के तुरत ज ताराओ छुपाइ जाय छे. तेओ पोतानी भूलने माटे पस्ताइने म्हों छुपावे छे !

'पोथां--पंडीत' नी पंडीताइ मात्र मूर्ख लोको आगळ ज चाली शके, संत अगर भक्त अगर परमात्मापरायण लोको आगळ ते झांखाझंख पडी जाय छे.

(८) जेणे खराब रस्ता छोडया नथी अने जे मायामां मोही रह्यो छे त्हेने पारसमणीनो स्पर्श हजी सुधी थयो ज नथी एम मानजो; तेथी ज ते लोढा जेवो छे. जो सद्गुरु के सद्ज्ञान के सत्देव (त्रणे एक ज छे) नो स्पर्श थयो होय तो आ दशा होय नहि.

(९) पोथां--थोथां भणीभणीने आ जगत पंडीत थवा इच्छे छे पण ज्यहां सुधी 'प्रेम' एवो अढी अक्षरनो शब्द भणायो नथी त्यहां सुधी खरी पंडीताइ कदी आवनार नथी. प्रेम एटले सार्वत्रीक प्रेम, ईश्वरी प्रेम.

आत्म तत्त्व जाने नहिं, कोटी कथन है ज्ञान;
तारे तिमिर भागे नहिं, जब लग उगे न भान. १०
मैं जानुं पढवो भलो, पढनेसे भलो योग;
राम नामसे दिल मिला, भले हि निंदे लोग. ११
समजनका घर और है, औरोंका घर और;
समज्या पिछे जानिये, "राम बसे सब ठौर." १२

---

(१०) आत्म तत्त्वने समजे नहि त्यहां सुधी करोडो प्रकारनुं ज्ञान (सायन्स, इतिहास, खगोळ, भूगोळ, भुस्तर, भाषाज्ञान, तर्कशास्त्र, वैदकविद्या वगेरे तमाम) त्हेनुं अंधकार मटाडवाने पुरतुं थतुं नथी. सूर्य—आत्मसूर्यनो उदय हृदयमां थया सिवाय अजवाळुं थतां आखी दुनीआना पदार्थो अने बनावो जुदीज दृष्टिए देखाय. दृष्टि (Point—of—view) ज बदलाइ जाय.

(११) कबीरजीने पहेलां तो एम लाग्युं के शास्त्रनो अभ्यास करवो एज ठीक छे; पछी जणायुं के अभ्यासथी तो 'योग' मार्ग सारो छे; पण छेवटे जणायुं के ते बन्ने करतां रामनामना स्मरणमां ज दील मळी गयुं ते ठीक थयुं. भक्ति योगनी सुगमता अहीं वर्णवी छे. भक्तिनी खुबी न समजनारा लोको निंदा करेछे माटे कबीरजी कहे छे के, भले तेम थाओ, पण म्हने तो 'राम' साथे ज एक तार जोडायो छे ए ठीक लागे छे.

(१२) समजणवाळा माणसनी दृष्टि जूदी होय छे अने बगर समजणवाळानी जूदी होय छे. समज्यो नहोतो त्यहारे हुं रामने अमुक जगाए ढुंढतो हतो, हवे समज्यो तो जणायुं के राम तो सर्व जगाए वसे छे. माटे रामनी भक्ति करवा माटे अमुक जगा 'रीझर्व्ड' राखी शकाय ज नहि. सर्व प्राणीनी सेवा ए ज रामसेवा छे. सर्वमां हुं अने हुंमां सर्व एवो 'एक भाव' थयो ए ज 'सेवा' छे.

कबीर ! यह संसारको, समजावुं कइ बार ?
पूंछ ज पकडे भेंसको, उतरा चाहे पार ! १३

मन मथुरा, दिल द्वारका, काया काशी जान;
दसमें द्वारे है देहरा, तामें जोत पिछान. १४

---

(१३) कबीरजी कहेछे के आ मूर्ख संसारने शी रीते समजावुं? एने भवरुपी समुद्रना पार जवुं छे, अने ते काम माटे होडी के गायने बदले कुगुरुरुपी भेंसनुं पुंछडुं पकडवा इच्छेछे ! ए भेंस जो एने डूबाडया वगर रहे तो पोपटीआ अने स्वार्थी गुरुओ नरकमां मारुया सिवाय रहे !

(१४) हे भाइ ! तुं मथुरा अने द्वारका अने काशी अने गीरनारजी अने तारंगाजी भटकवा जाय छे, पण हुं त्हने त्हारी पासेज ए बधां तीर्थस्थळो लावीने खडां करुं छुं छतां तुं शा माटे भटकवानी अने दाम खर्चवानी मूर्खाइ करेछे ? जो, देख ! त्हारुं मन एज मथुरा छे, दील एज द्वारका छे, काया एज काशी छे, तन एज तारंगाजी छे, गो अथवा इंद्रियो एज गीरनारजी छे; माटे तुं ए सर्व मन–वचन अने कायाने शुद्ध कर एटछे तीर्थ ज छे. त्हारा हैयाना दसमा द्वारमां जे देहेरुं छे त्यहांज परमात्मा बीराजे छे. एने शोध, शोध. आटला प्रयासे ध्यान धरीश तो परमात्मानी साथे एक तार जरुर जोडाशे. दशमा द्वार संबंधे विशेष हकीकत 'योग' ना जाणकार पुरुष पासेथी ज मळी शकशे.)